भूमिका

सिनेमा अपने आरंभ से ही अपना आकार और व्याकरण रचने लगा। इसमें प्रयोगों की अपार संभावनाएं थीं और हर प्रयोग मनुष्य और इस विधा के बीच रिश्तों की एक परत खोलता था। इसके व्यावसायिक इस्तेमाल के साथ ही जो सबसे बड़ी चुनौती फ़िल्मकारों के सामने आई वह थी कि इसके जरिये एक दिलचस्प कहानी कैसे कही जाए। शुरुआती दौर में प्रदर्शित होने वाली लुमियर ब्रदर्स की फिल्मों में कोई कहानी नहीं होती थी। उनका खेल बस इतना सा था कि वे किसी काल और स्थान में घटित घटना को फिल्माकर दोबारा प्रस्तुत कर देते थे। उनकी फिल्मों में कैमरा एक ही जगह पे स्थिर होता था और पूरी फिल्म एक शॉट में खत्म हो जाती थी। यानि उस समय तक सिनेमा का यथार्थ दर्शक कि आँखों तक ही सीमित था। कैमरे को एक आँख कि तरह इस्तेमाल करने कि काला तब तक के फ़िल्मकारों ने नहीं सीखिए थीं। प्रारंभिक फिल्में , लघु फिल्में हुआ करती थी जो एक ही जगह पे रख कर फिल्माया जाता था उसमें न कोई कहानी न ही संपादन हुआ करता था। लेकिन आज सिनेमा का स्वरूप बहुत बदल गया है इसका कारण ये है कि सिनेमा के निर्माण में धीरे-धीरे बदलाव हुआ है। प्रारंभ से ही इसमें प्रयोग होना शुरू हुआ जिससे सिनेमा अपना आकार लेने लगा। फिल्म निर्माण में कुछ फ़िल्मकारों ने बहुत अधिक भूमिका निभाई जिससे फिल्म को बनाने का एक आधार तैयार हुआ जो आजतक चला आ रहा है। यूं कहें की सिनेमा अपने शुरुआती दौर में ही उन फ़िल्मकारों के अथक प्रयोगों और प्रयास से हर स्तर पर अपना व्याकरण गढ़ चुका था।

दर्शक जब फिल्म देखता है तो जिन दृश्यों को देखकर प्रभावित होता है वह होता है निर्देशक की प्रतिभा का कमाल, लेकिन इस कमाल को बेमिसाल बनाने में संपादक का कमाल सबसे महत्वपूर्ण होता है। किसी भी फिल्म में संपादक पोस्ट प्रोडक्शन प्रक्रिया में उल्लेखनीय योगदान देता है जिसमें फिल्म का सौंदर्य पक्ष भी शामिल होता है। फिल्म संपादक का मुख्य कार्य मोशन पिक्चर,

फिल्म तथा वीडियो का संपादन करना है। संपादक फिल्माए गए टेप/रील में से विजुअल के सिक्वेंस को सिलसिलेवार तरीके से जमाने के साथसाथ दर्शकों को आकर्षित करने के लिए - जो भी आवश्यक हो, ध्वनि संगीत तथा प्रभाव को जोड़ता है। यह संपादक के कौशल का कमाल होता है कि वह अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता और प्रभाव का निर्धारण करता है। संपादक दृश्यों के विश्लेषण, मूल्यांकन, उसे काटने-छाटने, जमाने या जोड़ने के लिए आधुनिकतम उपकरणों का उपयोग कर उत्पादन कर्मियों के साथ मिलकर काम करते हैं।

सामान्यतः संपादक उपकरणों तथा मशीनों की मदद से एडिटिंग अथवा संपादन का काम किया जाता है। यह कार्य निश्चित रूप से थका देने वाला होता है क्योंकि इसमें बहुत सारा समय खपाना पड़ता है, लेकिन अब कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी का उपयोग कर यह कार्य डिजिटल रूप से किया जाने लगा है। डिजिटल या या नॉन लिनर एडिटिंग में सभी वीडियो/फिल्म और ऑडियो डाटा को हार्ड डिस्क पर ट्रांसफर कर लिया जाता है या किसी अन्य डिजिटल स्टोरेज डिवाइस पर स्टोर करने के बाद एडिटिंग के लिए उपलब्ध कई तरह के सॉफ्टवेयर की मदद से एडिटिंग कर ली जाती है। एडीटिंग अथवा संपादन फिल्म-निर्माण का सबसे अंतिम किन्तु संभवतः सबसे महत्वपूर्ण कार्य है । इसीलिए कहा जाता है कि वास्तविक फ़िल्म तो संपादक की मेज़ पर ही बनती है ।

इस आधार पर जब मैंने फिल्म-निर्माण में संपादन और संपादक की भूमिका के संदर्भ में उसकी विकस-यात्रा पर विचार किया तो यह विषय बहुत महत्त्वपूर्ण लगा । इस पर शोध करने का दूसरा और सबसे अहम पक्ष यह भी था की आज के डिजिटल दौर में फिल्म-निर्माण प्रक्रिया में संपादन और संपादक की भूमिका में क्या बदलाओ आया है ? यह प्रश्न इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि फिल्म-निर्माण की इस प्रक्रिया में फिल्म अपने वास्तविक स्वरूप में किस

प्रकार आती है और संपादक अपनी भूमिका किस तरह से निभाता है जिससे एक बेहतर फिल्म का निर्माण होता है।

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। ये सात अध्याय इस प्रकार हैं :-

1. **सिनेमा एक कला-** जिसके अंतर्गत सिनेमा के विविध आयाम और उसके पहलू के बारे में चर्चा की गई है।
2. **सिनेमा को समझना-** इसमें सिनेमा की भाषा और व्याकरण पर चर्चा की गयी है।
3. **फिल्म-निर्माण** -सिनेमा के विभिन्न चरणों और प्रक्रिया के बारे मे चर्चा की गयी है।
4. **संपादन के इतिहास** –संपादन के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है जिससे यह पता चलता है कि सिनेमा का विकास और उसमें किए गये प्रयोग से सिनेमा का स्वरूप में बदलाव कैसे आया।
5. **फिल्मों में संपादन(पोस्ट-प्रॉडक्शन)** –इसके अंतरगत फिल्मों को संपादित किस तरह किया जाता है। पहले फिल्मों का संपादन कैसे होता था और अब किस तरह से फिल्मों का संपादन होता है इस पर प्रकाश डाला गया है।
6. **फिल्म संपादन तकनीक-** इसमें संपादन तकनीकों और मशीनों के आविष्कार तथा डिजिटल के आगमन से आये बदलाव से संपादन पर क्या प्रभाव परा। संपादन की परिभाषा, संपादन के प्रकार, निरंतरता, शॉट्स को असेंबल करने के तरीके, मोन्ताज, फिल्म की शैली तथा संपादन के चरण पर चर्चा किया गया है।
7. **फिल्मों में संपादक की भूमिका**- संपादक सिनेमा के बनने कि प्रक्रिया में कीस तरह से अपनी भूमिका निभाता है। कैसे संपादक अपने कौशल और क्षमता से फिल्मों को प्रभावशाली बनाता है इस पर प्रकाश डाला गया है।

अंत में अभी हाल-फिलहाल फिल्मों में संपादन कर रहे दो संपादकों से साक्षात्कार का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

इन सातों अध्यायों के अंतर्गत फिल्म-निर्माण में संपादन और संपादक की भूमिका का गुणात्मक विश्लेषण करते हुए फिल्म-निर्माण में संपादन और संपादक की भूमिका की चर्चा की गई है । आशा है की यह शोधकार्य भविष्य मैं इस विषय-क्षेत्र में कार्य करने वाले शोध-कार्यों के लिए उपादेय होगा।

यह शोध-कार्य फिल्म में इस्तेमाल विभिन्न संपादन तकनीकों,संपादन शैलियों और फिल्म में संपादकों की भूमिका क्या होती है इस पर केंद्रित है। यह शोध संपादन के अध्ययन और संपादन के अलग-अलग तकनीक और फीचर पर केंद्रित है। इस शोध में संपादक फिल्म को कैसे और अधिक प्रभावी बनाती है फिल्म में संपादन की भूमिका क्या होती है इस पर केंद्रित किया है। इसलिए इस शोध प्रबंध में, संपादन की परिभाषा,प्रकार और तकनीक पर ध्यान केंद्रित किया है। संपादन विभिन्न फिल्म शैली में कैसे अलग-अलग काम करता है, संपादन के बारे में अध्ययन जो बताता है की कैमरा से लिया गया एक शॉट के महत्व और कोण कैसे फिल्म को संपादन कक्ष में जीवन मिलता है। इसके अलावा कैसे यह शोध संपादक के दिमाग का अध्ययन करने में मदद करता है और संपादक बेहतर फिल्म बनाने के लिए कैसे शॉट के साथ खेलता हैं। यह शोध प्रबंध हर किसी को फिल्म निर्माण में संपादन की बुनियादी अवधारणाओं और महत्व को समझने के लिए है, संपादन एक कला है। संपादन के अपने सिद्धांतों है। संपादन हर कटौती और हर संक्रमण, प्रभाव और सभी के लिए अपने स्वयं के कारण है। संपादन कक्ष में फिल्म के अनुक्रम, दृश्य, शॉट से उलटफेर किया जाता है, हम अनुसंधान के बाद में यह सब पहलुओं को विस्तार से देख सकते हैं।

इस लघु शोध प्रबंध में फिल्मों में संपादन और संपादक कि भूमिका क्या होती है इस पर बृहद रूप से प्रकाश डाला गया है और यह शोध पत्र गुणात्मक शोध प्रविधि प्रक्रिया में किया गया है। इस शोध प्रबंध में माध्यमिक स्रोत के लिए सामाग्री के रूप में साहित्य, लेख, वेबसाइटों, किताबों, मंचों, और साक्षात्कार को गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।